*प्रेस विज्ञप्ति*


# आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

**सरदारशहर 331 401**

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233


# 'ज्ञान आदमी की चेतना को प्रकाशित करता है'

**– आचार्य महाश्रमण**

**सरदारशहर 6 जून, 2010**

जिस व्यक्ति में राग-द्वैष प्रबल होता है वह अधम कोटि का व्यक्ति होता है और जिस व्यक्ति में राग-द्वैष पूर्णतया समाप्त हो जाता है वह व्यक्ति महान बन जाता है, मनुष्य केवल आकृति से छोटा-बड़ा नहीं होता, जिसकी प्रकृति अच्छी है वह बड़ा है, राग-द्वैष की वृत्ति को कमजोर करे तो मनुष्य का विकास होता चला जाता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने किशनलाल नाहटा के निवास पर धर्मसंभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि राग-द्वैष की वृत्तियां अपराध कराती है जिस व्यक्ति का राग-द्वैष से चित्त भावित होता है तो गलत काम भी आदमी कर लेता है।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा कि व्यक्ति वीतरागता से अपने चित्त को भावित करने का अभ्यास करे और जिस व्यक्ति की चेतना वीतरागता से भावित हो जाती है तो उसे कोई डिगा नहीं सकता और वह गलत काम नहीं कर सकता।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा कि ज्ञान आदमी की चेतना को प्रकाशित करता है। ज्ञान देने वाला गुरु होता है जो स्वयं ज्ञानी होते हैं और दूसरों को भी ज्ञान के पथ पर चलाने का प्रयास करते हैं और जिसने राग-द्वैष को कम किया है इसलिए उन्होंने गुरुता को प्राप्त किया है। मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है, आदमी के पास बुद्धि होती है वह अपने समय का उपयोग साधना में अच्छे कार्यों में करने का प्रयास करे तो उसके जीवन की भी सार्थकता सिद्ध होती है।

इस अवसर पर डॉ. कुसुम लूणिया ने अपने विचार व्यक्त किये, प्रमोद दूगड़ ने अपनी भावनाएं गीत के माध्यम से व्यक्त की।

साध्वी केसरजी के महाप्रयाणोपरांत लाडनूं से समागत उनके संसारपक्षीय लूंकड़ परिवार के सुरेन्द्र लूंकड़, भारती लूंकड़ आदि ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

**महाप्रज्ञ जीवन दर्शन कार्यशाला 9 जून से** – मुनि दिनेश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 9 जून से 15 जून तक चलने वाली महाप्रज्ञ जीवन कार्यशाला में प्रश्नोत्तर आदि का कार्यक्रम होगा। इस कार्यशाला में 61 वर्ष तक के भाई-बहिन भाग ले सकते हैं।